इक़बाल की कविताए

(बच्चों के लिए)

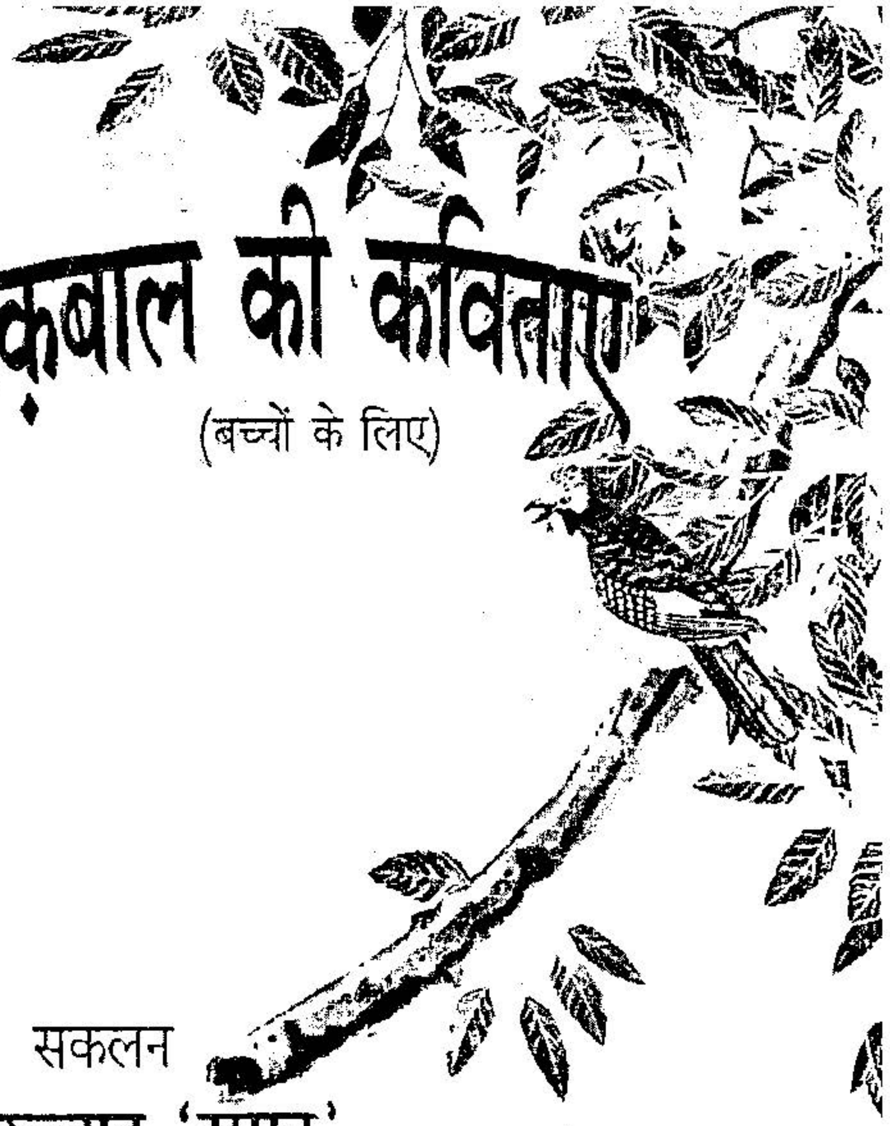

सकलन

नाउल्लाह 'सुमन'

शीर्षक		पृष्ठ
1.	बच्चे की दुआ	6
2.	एक पहाड़ और गिलहरी	7
3.	एक मकड़ा और मक्खी	9
4.	परिन्दे की फ़रियाद	13
5.	हमदर्दी	15
6.	माँ का ख़्वाब	16
7.	तरान-ए-हिन्दी	18
8.	हिन्दुस्तानी बच्चों का क़ौमी गीत	20
9.	एक गाय और बकरी	22
10.	चाँद और शायर	26
11.	जहाँ तक हो सके नेकी करो	29
12.	शहद की मक्खी	33

कुछ इक़बाल के बारे में

प्यारे बच्चो ! हम आपको सबसे पहले अल्लामा इक़बाल के बारे में कुछ बताना चाहते हैं । अल्लामा इक़बाल एक बहुत बड़े शायर (कवि) हुए हैं । उनका जन्म 9 नवम्बर, 1877 ई०/3 ज़ी क़ंअदा 1294 हिजरी को शहर 'सियालकोट' में हुआ था । यह शहर अब पाकिस्तान में है । उनके बाप का नाम नूर मुहम्मद और माँ का नाम इमाम बीबी था । अल्लामा इक़बाल के माँ बाप बहुत नेक थे ।

अल्लामा इक़बाल ने बड़ी मेहनत और लगन के साथ शिक्षा प्राप्त की । वे अपने उस्तादों का बहुत आदर करते और बड़ी मेहनत से उनसे इल्म हासिल करते थे । उन्हें पढ़ाई में मेहनत करने और अच्छे नम्बरों से कामयाब होने की वजह से कई इनाम भी मिले ।

उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए वे यूरोप गए । उन्होंने दुनिया के बहुत-से देशों का दौरा किया । वे उर्दू, पंजाबी, अरबी, फ़ारसी और अंग्रेज़ी आदि कई भाषाएँ जानते थे ।

प्यारे बच्चो! आप जानते हैं कि हमारे प्यारे देश हिन्दुस्तान पर अंग्रेज़ों ने अपना क़बज़ा जमा लिया था और यहाँ के रहनेवालों को अपना ग़ुलाम बना लिया था । अंग्रेज़ समुन्दर पार से आकर यहाँ हाकिम बन गए । वे यहाँ की जनता पर ज़ुल्म करते और यहाँ की दौलत को अपने देश ले जाते । यहाँ के बसनेवालों के अन्दर आपस में नफ़रत और दुश्मनी पैदा करते, ताकि हमारे देश के लोग आपस में एक न हो सकें

और देश कमज़ोर होता जाए। उन अंग्रज़ों ने अपने देश की बुरी-बुरी बातें और रस्में भी यहाँ फैलानी शुरू कर दीं। अल्लामा इक़बाल यह हालत देखकर बहुत दुखी थे। उन्होंने अपनी कविताओं और शायरी के ज़रिए देशवासियों को जगाया और उनके अन्दर सच्चा देश-प्रेम पैदा किया। वे उर्दू और फ़ारसी भाषा में शायरी करते थे।

अल्लामा इक़बाल ने प्यारे बच्चों के लिए भी कविताएँ लिखीं और उनको बड़ी अच्छी-अच्छी बातें सिखाने की कोशिश की। अल्लामा इक़बाल का इन्तिक़ाल 21 अप्रैल, 1938 ई० को 'लाहौर' शहर में हुआ।

प्यारे बच्चो! हमने अल्लामा इक़बाल की कुछ कविताओं को जो बच्चों के लिए हैं, जमा करके उनको हिन्दी में लिखकर आपके लिए पेश कर दिया है। उर्दू के जो शब्द मुशकिल हैं, उनका हिन्दी में मतलब भी लिख दिया है। अगर फिर भी कोई शब्द समझ में न आए तो अपने बड़ों से मालूम कर लें। अच्छे बच्चे जानकारी हासिल करने में कभी नहीं शरमाते।

हमें उम्मीद है कि कविताओं की यह पुस्तक हमारे प्यारे बच्चों को पसन्द आएगी और वे ख़ुद भी इससे पूरा-पूरा फ़ायदा उठाएँगे और अपने साथियों को भी यह पुस्तक भेंट करेंगे।

-नसीम ग़ाज़ी फ़लाही

बच्चे की दुआ

लब[1] पे आती है दुआ बनके तमन्ना मेरी
ज़िन्दगी शम्मा[2] की सूरत हो ख़ुदाया[3] मेरी

दूर, दुनिया का मेरे दम से अँधेरा हो जाए
हर जगह मेरे चमकने से उजाला हो जाए

हो मेरे दम से यूँ ही मेरे वतन की ज़ीनत[4]
जिस तरह फूल से होती है चमन की ज़ीनत

ज़िन्दगी हो मेरी परवाने[5] की सूरत या रब!
इल्म[6] की शम्मा से हो मुझको मुहब्बत या रब!

हो मेरा काम ग़रीबों की हिमायत करना
दर्दमन्दों[7] से ज़ईफ़ों[8] से मुहब्बत करना

मेरे अल्लाह! बुराई से बचाना मुझको
नेक जो राह हो उस रह पे चलाना मुझको

---

1. होंठ, 2. चिराग़, दीपक, 3. ऐ ख़ुदा, 4. शोभा, 5. पतिंगा, 6. ज्ञान, 7. दुखी लोगों, 8. कमज़ोरों, निर्बलों।

एक पहाड़ और गिलहरी

कोई पहाड़ यह कहता था एक गिलहरी से
तुझे हो शर्म तो पानी में जाके डूब मरे

ज़रा-सी चीज़ है, इसपर गुरूर[1], क्या कहना
यह अक़्ल और यह समझ, यह शुऊर[2] क्या कहना

ख़ुदा की शान है नाचीज़ चीज़ बन बैठीं ?
जो बेशुऊर हों, यूँ बातमीज़ बन बैठीं ?

तेरी बिसात[3] क्या है मेरी शान के आगे?
ज़मीं[4] है पस्त मेरी आन-बान के आगे

जो बात मुझमें है, तुझको वह है नसीब कहाँ
भला पहाड़ कहाँ, जानवर ग़रीब कहाँ

कहा यह सुनके गिलहरी ने, मुँह सँभाल ज़रा
यह कच्ची बातें हैं, दिल से इन्हें निकाल ज़रा

जो मैं बड़ी नहीं तेरी तरह तो क्या परवाह
नहीं है तू भी तो आख़िर मेरी तरह छोटा

हर एक चीज़ से पैदा ख़ुदा की क़ुदरत है
कोई बड़ा, कोई छोटा यह उसकी हिकमत[5] है

बड़ा जहान[6] में तुझको बना दिया उसने
मुझे दरख़्त[7] पे चढ़ना सिखा दिया उसने

क़दम उठाने की ताक़त नहीं ज़रा तुझमें
निरी बड़ाई है, ख़ूबी है और क्या तुझमें

जो तू बड़ा है तो मुझ-सा हुनर दिखा मुझको
यह छालिया[8] ही ज़रा तोड़कर दिखा मुझको

नहीं है चीज़ निकम्मी कोई ज़माने में
कोई बुरा नहीं क़ुदरत के कारख़ाने में

---

1. घमंड, 2. समझ-बूझ (तमीज़), 3. हैसियत, 4. धरती, 5. तत्त्वदर्शिता, मसलिहत, 6. संसार, 7. पेड़, 8. सुपारी

एक मकड़ा और मक्खी

इक दिन किसी मक्खी से यह कहने लगा मकड़ा
इस राह से होता है गुज़र रोज़ तुम्हारा

लेकिन मेरी कुटिया की न जागी कभी क़िसमत
भूले से कभी तुमने यहाँ पाँव न रखा

ग़ैरों से न मिलिए तो कोई बात नहीं है
अपनों से मगर चाहिए यूँ खिंच के न रहना

आओ जो मेरे घर में, तो इज़्ज़त है यह मेरी
वह सामने सीढ़ी है, जो मंज़ूर हो आना

मक्खी ने सुनी बात जो मकड़े की तो बोली
हज़रत किसी नादान को दीजेगा ये धोखा

इस जाल में मक्खी कभी आने की नहीं है
जो आपकी सीढ़ी पे चढ़ा, फिर नहीं उतरा

मकड़े ने कहा वाह! फ़रेबी मुझे समझे
तुम-सा कोई नादान ज़माने में न होगा

मंज़ूर तुम्हारी मुझे ख़ातिर थी वगरना[1]
कुछ फ़ायदा अपना तो मेरा इसमें नहीं था

उड़ती हुई आई हो ख़ुदा जाने कहाँ से
ठहरो जो मेरे घर में तो है इसमें बुरा क्या?

इस घर में कई तुमको दिखाने की हैं चीज़ें
बाहर से नज़र आती है छोटी-सी यह कुटिया

लटके हुए दरवाज़ों पे बारीक हैं परदे
दीवारों को आइनों से है मैंने सजाया

मेहमानों के आराम को हाज़िर हैं बिछौने
हर शख़्स को सामाँ[2] यह मयस्सर नहीं होता

मक्खी ने कहा, ख़ैर यह सब ठीक है लेकिन
मैं आपके घर आऊँ, यह उम्मीद न रखना

इन नर्म बिछौनों से ख़ुदा मुझको बचाए
सो जाए कोई इनपे तो फिर उठ नहीं सकता

मकड़े ने कहा दिल में, सुनी बात जो उसकी
फाँसूँ इसे किस तरह, यह कमबख़्त है दाना[3]

सौ काम ख़ुशामद से निकलते हैं जहाँ में
देखो जिसे दुनिया में, ख़ुशामद का है बन्दा

यह सोच के मक्खी से कहा उसने बड़ी बी!
अल्लाह ने बख़्शा है बड़ा आपको रुतबा

होती है उसे आपकी सूरत से मुहब्बत
हो जिसने कभी एक नज़र आपको देखा

आँखें हैं कि हीरे की चमकती हुई कनियाँ[4]
सर आपका अल्लाह ने कलग़ी से सजाया

ये हुस्न, ये पोशाक, ये ख़ूबी, ये सफ़ाई
फिर इसपे क़ियामत है यह उड़ते हुए गाना

मक्खी ने सुनी जब ये ख़ुशामद, तो पसीजी
बोली कि नहीं आपसे मुझको कोई खटका

इनकार की आदत को समझती हूँ बुरा मैं
सच यह है कि दिल तोड़ना अच्छा नहीं होता

यह बात कही और उड़ी अपनी जगह से
पास आई तो मकड़े ने उछलकर उसे पकड़ा

भूखा था कई रोज़ से, अब हाथ जो आई
आराम से घर बैठ के, मक्खी को उड़ाया

---

1. नहीं तो, 2. सामान, 3. समझदार, 4. टुकड़े

परिन्दे की फ़रियाद

आता है याद मुझको गुज़रा हुआ ज़माना
वह बाग़ की बहारें, वह सबका चहचहाना

आज़ादियाँ कहाँ वह अब अपने घोंसले की
अपनी ख़ुशी से आना, अपनी ख़ुशी से जाना

लगती है चोट दिल पे, आता है याद जिस दम
शबनम के आँसुओं पर कलियों का मुस्कराना

वह प्यारी-प्यारी सूरत, वह कामिनी-सी मूरत
आबाद जिसके दम से था मेरा आशियाना[1]

आती नहीं सदाएँ[2] उसकी मेरे क़फ़स[3] में
होती मेरी रिहाई ऐ काश! मेरे बस में

क्या बदनसीब हूँ मैं, घर को तरस रहा हूँ
साथी तो हैं वतन में, मैं क़ैद में पड़ा हूँ

आई बहार, कलियाँ फूलों की हँस रही हैं
मैं इस अँधेरे घर में क़िस्मत को रो रहा हूँ

इस क़ैद का, इलाही[4]! दुखड़ा किसे सुनाऊँ
डर है यहीं क़फ़स में, मैं ग़म से मर न जाऊँ

जब से चमन छुटा है यह हाल हो गया है
दिल ग़म को खा रहा है, ग़म दिल को खा रहा है

गाना इसे समझ के ख़ुश हों न सुननेवाले
दुखते हुए दिलों की फ़रियाद यह सदा[5] है।

आज़ाद मुझको कर दे ओ क़ैद करनेवाले!
मैं बेज़बाँ[6] हूँ क़ैदी, तू छोड़कर दुआ ले

---

1. घोंसला, 2. आवाज़ें, 3. पिंजरा, 4. ऐ अल्लाह!, हे ईश्वर!, 5.आवाज़, 6.गूँगा, जो बोल न सके.

हमदर्दी

टहनी पे किसी शजर[1] की तनहा[2]
बुलबुल था कोई उदास बैठा

कहता था कि रात सर पे आई
उड़ने चुगने में दिन गुज़ारा

पहुँचूँ किस तरह आशियाँ[3] तक
हर चीज़ पे छा गया अँधेरा

सुनकर बुलबुल की आहो ज़ारी[4]
जुगनू कोई पास ही से बोला

हाज़िर हूँ मदद को जानो-दिल से
कीड़ा हूँ अगरचे मैं ज़रा-सा

क्या ग़म है जो रात है अँधेरी
मैं राह में रौशनी करूँगा

अल्लाह ने दी है मुझको मशाल
चमका के मुझे दीया बनाया

हैं लोग वही जहाँ[5] में अच्छे
आते हैं जो काम दूसरों के

---

1. पेड़, 2. अकेला, 3. घोंसला, 4. रोना-चिल्लाना, 5. संसार.

माँ का ख़्वाब

मैं सोई जो एक शब[1] तो देखा यह ख़्वाब
बढ़ा और जिससे मेरा इज़्तिराब[2]

यह देखा कि मैं जा रही हूँ कहीं
अँधेरा है और राह मिलती नहीं

लरज़ता था डर से मेरा बाल-बाल
क़दम का था वहशत[3] से उठना महाल[4]

जो कुछ हौसला पाके आगे बढ़ी
तो देखा क़तार[5] एक लड़कों की थी

ज़ुमुर्रुद[6] की पोशाक पहने हुए
दीये सब के हाथों में जलते हुए

वह चुपचाप थे आगे-पीछे रवाँ[7]
ख़ुदा जाने जाना था उनको कहाँ

इसी सोच में थी कि मेरा पिसर[8]
मुझे इस जमाअत[9] में आया नज़र

वह पीछे था और तेज़ चलता न था
दीया उसके हाथों में जलता न था

कहा मैंने पहचानकर मेरी जाँ
मुझे छोड़कर आ गए तुम कहाँ

जुदाई मे रहती हूँ मैं बेक़रार
पिरोती हूँ हर रोज़ अश्कों[10] के हार

न परवाह हमारी ज़रा तुमने की
गए छोड़, अच्छी वफ़ा तुमने की

जो बच्चे ने देखा मेरा पेचो ताब[11]
दिया उसने मुँह फेरकर यूँ जवाब

रुलाती है तुझको जुदाई मेरी
नहीं इसमें कुछ भी भलाई मेरी

यह कहकर वह कुछ देर तक चुप रहा
दीया फिर दिखाकर यह कहने लगा

समझती है तू हो गया क्या इसे?
तेरे आँसुओं ने बुझाया इसे

---

1. रात, 2. बेचैनी, 3. डर, 4. मुशकिल, 5. लाइन, 6. हरे रंग का एक क़ीमती पत्थर, 7. चलते हुए, 8. बेटा, 9. टोली, 10. आँसुओं, 11. बेचैनी.

तरान-ए-हिन्दी[1]

सारे जहाँ से अच्छा, हिन्दोस्ताँ हमारा
हम बुलबुलें हैं इसकी, ये गुलसिताँ[2] हमारा

गुरबत[3] में हों अगर हम रहता है दिल वतन में
समझो वहीं हमें भी, दिल हो जहाँ हमारा

परबत वो सबसे ऊँचा हमसाया[4] आसमाँ का
वह संतरी हमारा, वह पासबाँ[5] हमारा

गोदी में खेलती हैं इसकी हज़ारों नदियाँ
गुलशन[6] है जिसके दम से रश्के जिनाँ[7] हमारा

ऐ आबे रूदे गंगा[8] वो दिन हैं याद तुझको
उतरा तेरे किनारे जब कारवाँ हमारा

मज़हब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना
हिन्दी हैं हम, वतन है हिन्दोस्ताँ हमारा

यूनानो[9] मिस्रो[10] रूमा[11] सब मिट गए जहाँ से
अब तक मगर है बाक़ी नामो-निशाँ[12] हमारा

कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी
सदियों रहा है दुश्मन दौरे ज़माँ[13] हमारा

इक़बाल! कोई महरम[14] अपना नहीं जहाँ में
मालूम क्या किसी को दर्दे निहाँ[15] हमारा

---

1. भारती गान; हिन्दुस्तानी तराना 2. फुलवारी, बाग़ 3. परदेस, 4. पड़ोसी, 5. पहरेदार, 6. फुलवारी, बाग़, 7. जन्नत भी जिसके समान होने की कामना करे, 8. गंगा नदी, 9. यूनान, 10. मिस्र, 11. रूम देश, 12. नाम और चिह्न, 13. कालचक्र, ज़माने की गर्दिश, 14. राज़दार, 15. छिपा हुआ दर्द.

हिन्दुस्तानी बच्चों का क़ौमी गीत

चिश्ती[1] ने जिस ज़मीं में पैग़ामे हक़[2] सुनाया
नानक ने जिस चमन में वहदत[3] का गीत गाया
तातारियों[4] ने जिसको अपना वतन बनाया
जिसने हिजाज़ियों[5] से दश्ते अरब[6] छुड़ाया

मेरा वतन वही है, मेरा वतन वही है।

यूनानियों[7] को जिसने हैरान कर दिया था
सारे जहाँ को जिसने इल्मो हुनर[8] दिया था
मिट्टी को जिसकी हक़[9] ने ज़र[10] का असर दिया था
तुर्कों[11] का जिसने दामन हीरों से भर दिया था

मेरा वतन वही है, मेरा वतन वही है।

टूटे थे जो सितारे फ़ारस[12] के आसमाँ[13] से
फिर ताब देके जिसने चमकाए कहकशाँ[14] से
वहदत की लय सुनी थी दुनिया ने जिस मकाँ[15] से
मीरे अरब[16] को आई ठंडी हवा जहाँ से

मेरा वतन वही है मेरा वतन वही है।

बन्दे कलीम[17] जिसके, पर्वत जहाँ के सीना[18]
नूहे नबी[19] का आकर ठहरा जहाँ सफ़ीना[20]
रिफ़अत[21] है जिस ज़मीं की बामे फ़लक[22] का ज़ीना[23]
जन्नत की ज़िन्दगी है जिसकी फ़ज़ा[24] में जीना

मेरा वतन वही है, मेरा वतन वही है।

---

1. मुईनुद्दीन चिश्ती, एक बुज़ुर्ग, 2. सत्य का पैग़ाम, 3. ईश्वर का एक होना, मानव एकता, 4. एक क़ौम, 5. अरब निवासियों, हिजाज़ के लोगों, 6. अरब का उजाड़ चटियल मैदान, 7. एक क़ौम, 8. विद्या, ज्ञान और कला, 9. सत्य, ईश्वर, अल्लाह, 10. सोना, 11. एक क़ौम, 12. ईरान, 13. आकाश, 14. आकाश गंगा, 15. जगह, 16. अरब के सरदार हज़रत मुहम्मद (सल्ल०), 17. हज़रत मूसा (अलै०) का दूसरा नाम, 18. सीना पर्वत जो शाम (सीरिया) देश में है, 19. नबी नूह (अलै०), 20. कश्ती, नाव, 21. बुलन्दी, ऊँचाई, 22. आकाश की छत, 23. सीढ़ी, 24. हवा, वातावरण.

एक गाय और बकरी

इक चरागाह हरी भरी थी कहीं
थी सरापा[1] बहार जिसकी ज़मीं

क्या समाँ[2] उस बहार का हो बयाँ[3]
हर तरफ़ साफ़ नदियाँ थीं रवाँ[4]

थे अनारों के बेशुमार दरख़्त
और पीपल के सायादार दरख़्त

ठंडी-ठंडी हवाएँ आती थीं
ताइरों[5] की सदाएँ[6] आती थीं

किसी नदी के पास इक बकरी
चरते-चरते कहीं से आ निकली

जब ठहरकर इधर उधर देखा
पास एक गाय को खड़े पाया

पहले झुककर उसे सलाम किया
फिर सलीक़े से यूँ कलाम[7] किया

क्यूँ बड़ी बी! मिज़ाज कैसे हैं
गाय बोली कि ख़ैर अच्छे हैं

कट रही है बुरी भली अपनी
है मुसीबत में ज़िन्दगी अपनी

जान पर आ बनी है क्या कहिए
अपनी क़िसमत बुरी है क्या कहिए

देखती हूँ ख़ुदा की शान को मैं
रो रही हूँ बुरों की जान को मैं

ज़ोर चलता नहीं ग़रीबों का
पेश आया लिखा नसीबों का

आदमी से कोई भला न करे
उससे पाला पड़े, ख़ुदा न करे

दूध कम दूँ तो बड़बड़ाता है
हूँ जो दुबली तो बेच खाता है

हथकंडों से गुलाम करता है
किन फ़रेबों से राम करता है[8]

उसके बच्चों को पालती हूँ मैं
दूध से जान डालती हूँ मैं

बदले नेकी के यह बुराई है
मेरे अल्लाह ! तेरी दुहाई है

सुनके बकरी यह माजरा सारा
बोली, ऐसा गिला[9] नहीं अच्छा

बात सच्ची है बेमज़ा लगती
मैं कहूँगी मगर ख़ुदा लगती

यह चरागाह, यह ठंडी-ठंडी हवा
यह हरी घास और यह साया

ऐसी ख़ुशियाँ हमें नसीब कहाँ
यह कहाँ, बेज़बाँ ग़रीब कहाँ

ये मज़े आदमी के दम से हैं
लुत्फ़[10] सारे उसी के दम से हैं

उसके दम से है अपनी आबादी
क़ैद हमको भली, कि आज़ादी?

सौ तरह का वनों में खटका है
वाँ[11] की गुज़रान[12] से बचाए ख़ुदा

हमपे एहसान है बड़ा उसका
हमको ज़ेबा[13] नहीं गिला उसका

क़द्र आराम की अगर समझो
आदमी का कभी गिला न करो

गाय सुनकर यह बात शर्माई
आदमी के गिले से पछताई

दिल में परखा भला-बुरा उसने
और कुछ सोचकर कहा उसने

यूँ तो छोटी है ज़ात[14] बकरी की
दिल को लगती है बात बकरी की

---

1. सिर से पैर तक अर्थात पूर्ण रूप से, 2. सुन्दर दृश्य, शोभा 3. बयान, 4. बहती हुई, 5. चिड़ियों, 6. आवाज़ें, 7. बात-चीत, 8. वश में करता है, 9. शिकायत, 10. मज़े, 11. वहाँ, 12. गुजर-बसर, 13. मुनासिब, शोभनीय, 14. व्यक्तित्त्व ।

चाँद और शायर

शायर

इक रात मेरे दिल में जो कुछ आ गया ख़्याल
यूँ चौदहवीं के चाँद से मैंने किया सवाल

ऐ चाँद, तुझसे रात की इज़्ज़त है लाज है
सूरज का राज दिन को, तेरा शब[1] को राज है

तूने ये आसमान की महफ़िल सजाई है
तूने ज़मीं को नूर[2] की चादर उढ़ाई है

तू वो दीया[3] है जिससे ज़माने में नूर है
है तू फ़लक[4] पे, नूर तेरा दूर-दूर है

फीकी पड़ी हुई है सितारों की रौशनी
गोया कि इस चमन पे ख़िज़ाँ[5] की हवा चली

तेरी चमक के सामने शरमा गए हैं ये
तेरी हवा बँधी है[6] तो मुरझा गए हैं ये

इस वक़्त तेरे सामने सूरज भी मात है
दूल्हा है तू, नुजूम[7] की महफ़िल बरात है

पाई है चाँदनी ये कहाँ से, बता मुझे
ये नूर, ये कमाल, कहाँ से मिला तुझे

मुझको भी आरज़ू है कि ऐसा कमाल हो
तेरी तरह कमाल मेरा बेमिसाल हो

रौशन हो मेरे दम से ज़माना इसी तरह
दुनिया में अपना नाम निकालूँ तेरी तरह

हासिल करूँ कमाल, बनूँ चौदहवीं का चाँद
तू है फ़लक का चाँद, बनूँ मैं ज़मीं का चाँद

हर एक की नज़र में समाऊँ इसी तरह
शोहरत के आसमान पे चमकूँ इसी तरह

चाँद

मेरा सवाल सुनके कहा चाँद ने मुझे
ले, भेद अपने नूर का कहता हूँ मैं तुझे

सूरज अगर न हो तो गुज़ारा नहीं मेरा
माँगा हुआ है नूर यह अपना नहीं मेरा

सूरज के दम से मुझको यह हासिल कमाल है
कामिल उसी के नूर से मेरा हिलाल[8] है

फिरता हूँ रौशनी की तमन्ना में रात-दिन
रहता हूँ मैं कमाल के सौदा में रात-दिन

मुझको उड़ाए फिरती है ख़्वाहिश कमाल की
कर पैरवी जहान में मेरी मिसाल की

बेफ़ायदा न अपने दिनों को ख़राब कर
मेरी तरह तलाश कोई आफ़ताब[9] कर

कहते हैं जिसको इल्म वह इक आफ़ताब है
यकता है, बेमिसाल है और लाजवाब है

ऐसे कमाल की है तमन्ना अगर तुझे
तू नूर, जाके माँग उसी आफ़ताब से

है चाँद के कमाल को ख़तरा ज़वाल[10] का
रहता है हर घड़ी उसे धड़का ज़वाल का

महफ़ूज़ इस ख़तर से हुनर का कमाल है
घटने का उसको डर है न ख़ौफ़े ज़वाल है

दुनिया में ज़िन्दगी का नहीं एतिबार कुछ
रहती है इस चमन में हमेशा बहार कुछ

इनसाँ को फ़िक्र चाहिए हर दम कमाल की
'कस्बे कमाल कुन कि अज़ीज़े जहाँ शवी'[11]

---

1. रात, 2. रौशनी, प्रकाश, 3. दीपक, चिराग़, 4. आसमान, 5. पतझड़ का मौसम, 6. धाक जमना, रौब जमना, 7. सितारे, 8. दूज का चाँद, 9. सूरज, 10. पतन, गिरावट, 11. कमाल को हासिल कर कि लोकप्रिय हो जाए।

जहाँ तक हो सके नेकी करो

कहते हैं एक साल न बारिश हुई कहीं
गर्मी से आफ़ताब की तपने लगी ज़मीं

था आसमान पर न कहीं अब्र[1] का निशाँ
पानी मिला न जब तो हुईं ख़ुश्क[2] खेतियाँ

लाले पड़े थे जान के[3] हर जानदार को
उजड़े चमन, तरसते - तरसते बहार[4] को

मुँह तक रही थी ख़ुश्क ज़मीं आसमान का
उम्मीद साथ छोड़ चुकी थी किसान का

बारिश की कुछ उम्मीद न थी उस ग़रीब को
ये हाल था कि जैसे कोई सोगवार[5] हो

इक दिन जो अपने खेत में आकर खड़ा हुआ
पौधों का हाल देख के बेताब[6] हो गया

हर बार आसमाँ की तरफ़ देखता था वो
बारिश के इन्तिज़ार में घबरा रहा था वो

नागाह[7] एक अब्र का टुकड़ा नज़र पड़ा
लाती थी अपने साथ उड़ाकर जिसे हवा

पानी की एक बूँद ने ताका इधर-उधर
बोली वो उस किसान की हालत को देखकर

वीरान हो गई है ज़ो खेती ग़रीब की
है आसमान पर नज़र उस बदनसीब की

दिल में ये आरज़ू है कि उसका भला करूँ
यानी बरस के खेत को उसके हरा करूँ

बूँदों ने जब सुनी ये सहेली की गुफ़्तगू[8]
हँसकर दिया जवाब कि अल्लाह रे आरज़ू

तू इक ज़रा सी बूँद है इतना बड़ा ये खेत
तेरे ज़रा से नम से न होगा हरा ये खेत

तेरी बिसात[9] क्या है कि इसको हरा करे
हो ख़ुद जो हेच[10], क्या वो किसी का भला करे

उस बूँद ने मगर ये बिगड़कर दिया जवाब
कह दी वो बात जिसने किया सबको लाजवाब

माना कि इक बूँद हूँ, दरिया नहीं हूँ मैं
क़तरा[11] ज़रा-सा हूँ कोई छींटा नहीं हूँ मैं

माना कि मेरा नम कोई दरिया का नम नहीं
हिम्मत तो मेरी बहर[12] की हिम्मत से कम नहीं

नेकी की राह में कभी हिम्मत न हारिए
मक़दूर[13] हो तो उम्र इसी में गुज़ारिए

कुरबान अपनी जान करूँगी किसान पर
क्या लूँगी मैं ठहर के यहाँ आसमान पर

नेकी के काम से कभी रुकना न चाहिए
इसमें किसी के साथ की परवा न चाहिए

लो, मैं चली ये कह के रवाना हुई वो बूँद
बूँदों की अंजुमन[14] में यगाना[15] हुई वो बूँद

टप से जो उसकी नाक पे वो बूँद गिर पड़ी
सूखी हुई किसान के दिल की कली खिली

देखा सहेलियों ने तो हैरान हो गईं
हिम्मत के इस कमाल पे, की सबने आफ़रीं[16]

बोलीं कि चाहिए न सहेली को छोड़ना
अच्छा नहीं है मुँह को रफ़ाक़त[17] से मोड़ना

साथी के साथ सबको बरसना ज़रूर है
गर हम न साथ दें तो मुरव्वत से दूर है

ये कह के एक साथ वो बूँदें रवाँ[18] हुईं
छींटा-सा बन के खेत के ऊपर बरस गईं

क़िसमत खुली[19] किसान की, बिगड़ी हुई बनी
सूखी हुई ग़रीब की खेती हरी हुई

फिर सामने नज़र के बँधा आस का समाँ
थी आस आस-पास, गया यास[20] का समाँ

उजड़ा हुआ जो खेत था आख़िर हरा हुआ
सारा ये एक बूँद की हिम्मत का काम था

देखी गई न उससे मुसीबत किसान की
बेताब होके खेत पे उसके बरस गई

नन्हीं-सी बूँद और ये हिम्मत, ख़ुदा की शान!
ये फ़ैज़[21], ये करम, ये मुरव्वत ख़ुदा की शान!

---

1. बादल, मेघ, 2. सूखा, 3. जीने की उम्मीद न रहना, 4. वसंत, 5. ग़मगीन, शोक में लिप्त, 6. बेचैन, 7. अचानक, 8. बातचीत, 9. ताक़त, 10. कुछ नहीं, थोड़ा, निकम्मा, 11. बूँद, 12. समुन्दर, बड़ा दरिया, 13. क़ुदरत, ताक़त, हौसला, 14. मजलिस, सभा, 15. अकेली, अलग, 16. शाबाश, मुबारकबाद, 17. साथ, दोस्ती, वफ़ादारी, 18. रवाना, बहता हुआ, 19. नसीब जागना, 20. मायूसी, निराशा, 21. फ़ायदा, भलाई.

शहद की मक्खी

इस फूल पे बैठी, कभी उस फूल पे बैठी
बतलाओ तो, क्या ढूँढ़ती है शहद की मक्खी?

क्यों आती है, क्या काम है गुलज़ार[1] में उसका?
ये बात जो समझाओ तो समझें तुम्हें दाना[2]

चहकारते फिरते हैं जो गुलशन में परिन्दे
क्या शहद की मक्खी की मुलाक़ात है उनसे?

आशिक़ है ये कुमरी[3] की, कि बुलबुल की है शैदा[4]?
या खींच के लाता है इसे सैर का चसका?

दिल बाग़ की कलियों से तो अटका नहीं इसका?
भाता है इसे उनके चटखने का तमाशा?

सबज़े[5] से है कुछ काम कि मतलब है सबा[6] से?
या प्यार है गुलशन के परिन्दों की सदा[7] से?

भाता है इसे फूल पे बुलबुल का चहकना?
या सरो[8] पे बैठे हुए कुमरी का ये गाना?

पैग़ाम कोई लाती है बुलबुल की ज़बानी?
या कहती है ये फूल के कानों में कहानी?

क्यों बाग में आती है, ये बतलाओ तो जानें?
क्या कहने को आती है, ये समझाओ तो जानें?

बेवजह तो आख़िर कोई आना नहीं इसका
होशियार है मक्खी, इसे ग़ाफ़िल न समझना

बेसूद[9] नहीं, बाग़ में इस शौक़ से उड़ना
कुछ खेल में ये वक़्त गँवाती नहीं अपना

करती नहीं कुछ काम अगर अक़्ल तुम्हारी
हम तुमको बताते हैं, सुनो बात हमारी

कहते हैं जिसे शहद, वह इक तरह का रस है
आवारा इसी चीज़ की ख़ातिर ये मगस[10] है

रखा है ख़ुदा ने उसे फूलों में छुपाकर
मक्खी उसे ले जाती है छत्ते में उड़ाकर

हर फूल से ये चूसती फिरती है उसी को
ये काम बड़ा है, इसे बेसूद न जानो

मक्खी ये नहीं है, कोई नेमत है ख़ुदा की
मिलता न हमें शहद, ये मक्खी जो न होती

इस शहद को फूलों से उड़ाती है ये मक्खी
ख़ुद खाती है औरों को खिलाती है ये मक्खी

इनसान की ये चीज़ ग़िज़ा[11] भी है, दवा भी
कुव्वत है अगर इसमें तो है इसमें शिफ़ा[12] भी

रखते हो अगर होश तो इस बात को समझो
तुम शहद की मक्खी की तरह इल्म को ढूँढ़ो

ये इल्म भी इक शहद है और शहद भी ऐसा
दुनिया में नहीं शहद कोई इससे मुसफ़्फ़ा[13]

हर शहद से जो शहद है मीठा, वो यही है
करता है जो इनसान को दाना, वो यही है

ये अक़्ल के आइने को देता है सफ़ाई
ये शहद है इनसाँ की, वो मक्खी की कमाई

सच समझो तो इनसान की अज़मत[14] है इसी से
इस ख़ाक के पुतले को सँवारा है इसी ने

फूलों की तरह अपनी किताबों को समझना
चसका हो अगर तुमको भी कुछ इल्म के रस का

---

1. गुलशन, फुलवारी, 2. अक़्लमंद, होशियार, 3. एक चिड़िया, 4. आशिक़, 5. हरियाली, 6. सुबह की हवा, 7. आवाज़, 8. एक सीधा छतनार पेड़, वनझाऊ, 9. बेफ़ायदा, बेमक़सद, 10. मक्खी, शहद की मक्खी, 11. खाना, भोजन, 12. तन्दुरुस्ती, रोग से मुक्ति, 13. साफ़-सुथरा, स्वच्छ, 14. बड़ाई, महानता.